ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-4* Issue-12* January- 2020
Innovation The Research Concept

भारत में सामाजिक परिवर्तन

सारांश

भारत में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया निरन्तर गतिशील रही है। आज का भारत 100 वर्ष पहले के भारत से पूर्णतया भिन्न है। भारत में सामाजिक परिर्वतन पश्चिमीकरण का प्रभाव है–पश्चिमीकरण ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत पश्चिमी अपने सामाजिक मूल्यों और सामाजिक संस्थाओं तथा आदर्शो को पूर्वी समाज पर थोपने का प्रयास करते हैं। यह प्रयास इसलिए संभव हो सका क्योंकि इंग्लैंड, पुर्तगाल, फ्रांस, हॉलैण्ड आदि पश्चिमी देश साम्राज्यवादी देश रहे और भूतकाल में इन्होंने अनेक पूर्वी देशों पर अपना साम्राज्य स्थापित किया और इन अधीन देशों पर पश्चिमीकरण की विचारधारा थोपी। यद्यपि अब पूर्वी देश राजनीतिक दृष्टि से स्वतंत्र हो गये हैं परन्तु वे पश्चिमी देशों के प्रभाव से अभी तक मुक्त नहीं हो पाये हैं।

उपेन्द्र प्रसाद
राजनीति विज्ञान विभाग
बी0 आर0 ए0 बी0 यू0
मुजफ्फरपुर
बिहार, भारत

अंजू कुमारी
बी0 आर0 ए0 बी0 यू0
मुजफ्फरपुर
बिहार, भारत

भारत में सामाजिक परिवर्तन के निम्नालिखित कारक हैः–

01. **औद्योगीकरणः–** 20 वी. शताब्दी में भारत में औद्योगीकरण का श्री गणेश हुआ। औद्योगीकरण के कारण बड़े पैमाने पर उत्पादन कार्य हुआ, जिससे बड़े–बड़े उद्योग और कारखाने लगे। इन उद्योगों में कार्य करने के लिए बड़ी संख्या में मजदूरों की आवश्यकता हुई। पूँजीवाद का विकास हुआ। इसके लिए धन और सम्पत्ति की मान्यताएं बदलनें लगी। आर्थिक क्रियाओं के प्रति उदासीनता बढ़ने लगी।
02. **नगरीकरणः–** औद्योगीकरण के फलस्वरूप शहरों में लगने वाले बड़े–बड़े कारखानों और मिलों में कार्य करने के लिए गांवो से आकर लोग शहरों में बसने लगे जिससे एक ओर तो गांवों का संयुक्त परिवार टूटने लगा, दूसरे शहरों में उनके रहने के लिए श्रमिक बस्तियों का निर्माण होने लगा।
03. **पाश्चात्य सम्यता और संस्कृतिः–** भारतीय समाज में परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति भी है जिसके असर रहन–सहन, पोशाक, खान–पान, मकानों के डिजाइन, नृत्य, गीत, अभिवादन करने के ढंग आदि पर स्पष्ट देखा जा सकता है।
04. **संस्कृतिकरणः–** वह प्रक्रिया जिसके द्वारा कोई निम्नस्तरीय हिन्दू जाति या कोई जनजाति अथवा अन्य समूह किसी उच्चस्तरीय और प्रायः 'द्विज' जाति का अनुकरण करता हुआ अपने रीति–रिवाज, कर्मकाण्ड विचारधारा और जीवन पद्धति को बदलता है।

भारत में समाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाः–

भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इतने अधिक परिवर्तन समाज में हुये हैं कि सभी परिवर्तनों का सविस्तार वर्णन करना असंभव है। ये परिवर्तन भारतीय समाज को पारम्परिक समाज से आधुनिकता की ओर ले जा रहे हैं।

01. **परिवारिक जीवन में परिवर्तनः–** वर्तमान में परिवार अपने परम्परागत स्वरूप से भिन्न होता जा रहा है। परिवार में बड़ों का सम्मान कम होता जा रहा है। परिवार की शिक्षा या दायित्व स्कूल और कॉलेजों को मिल गया है। परिवार के आर्थिक कार्य मिल और कारखानों द्वारा किये जाने लगे हैं।
02. **संयुक्त परिवार का विघटनः–** आज संयुक्त परिवार टूट रहे हैं क्योंकि धन अहम् या अधिकार के कारण झगड़े होते है या उदर पूर्ति के लिए परिवार से बाहर जाना अनिवार्य हो गया है। औद्योगिकीकरण के कारण गाँवों के कुटीर उद्योग या गृह उद्योग नष्ट होने लगे है या परिवार की जनसंख्या बढ़ने से एक साथ गुजारा मुश्किल हो गया है। काम की तलाश में परिवार के सदस्यों को बाहर जाना पड़ रहा है।
03. **जाति प्रथा में परिवर्तनः–** हिन्दू समाज की महत्वपूर्ण संस्था जाति प्रथा में परिवर्तन होने लगे है। जातिवाद और खान–पान के प्रतिबंध ढीले पड़ने लगे है। जाति के निश्चित पेशे भी आधुनिक शिक्षा, औद्योगीकरण, नगरीकरण के कारण बदलने लगे है।

04. **सामुदायिक जीवन की कमीः–** भारतीय सामाजिक जीवन में एक परिवर्तन यह भी आया है कि अब व्यक्तियों में सामुदायिक भावना की कमी होने लगी है। औद्योगीकरण और नगरीकरण के कारण समूहों के आकार बढ़ रहे है परन्तु उनमें 'हम' की भावना कम हो रही है। इसलिए वे अपने स्वार्थों को महत्व देने लगे है न कि समुदाय के सामान्य स्वार्थो का।
05. **पूँजीवाद का विकासः–** पहले देश में कुटीर उद्योग का गृह उद्योग थे, परन्तु वर्तमान में पूँजीवाद बढ़ा है। इसमें उत्पादन के साधनों पर पूँजीपति का अधिकार होता है। पूँजीवाद से अधिक मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन होता है जिससे गृह–उद्योग नष्ट हो जाते है और पूँजीहीन व्यक्ति अपना श्रम बेचकर गुजारा करते हैं। भारत के गाँव के कुटीर उद्योग बड़ी–बड़ी मशीनों से बनने वाले सस्ते और अच्छे माल से प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाये इसलिए उनका पतन हो गया।
06. **महँगाई और बेरोजगारीः–** आज एक ओर जहाँ आम व्यक्ति की आय में बढ़ोतरी हुई है वहीं दूसरी ओर बढ़ती हुई महँगाई और बेरोजगारी से भी जनता परेशान है। इसलिए अनेक व्यक्ति गलत और अनैतिक कार्य करने के लिए प्रेरित होते है। जब आदमी के जीवन स्तर में बदलाव होगा तो मँहगाई तो झेलनी ही पड़ेगी जिस कारण लोग गलत तरीके से बिना परिश्रम के ज्यादा पैसा कमाना चाहते हैं यही है पश्चिमीकरण का प्रभाव।

राजनीतिक क्षेत्र में देश में राजनीतिक गुटबन्दी और भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिला है। राजनीतिक दलों ने आरक्षण की नीति लागू कर रखी है। वोट की राजनीति के कारण राजनीतिक दल अनेक समस्याओं का समाधन राजनीति में उलझा देते है।

आज व्यक्ति समूह के स्थान पर अपने लिए सोचने लगा है। वह यह जान गया है कि समाज में व्यक्ति का सम्मान जाति या परिवार से न होकर व्यक्तिगत गुणों और धन से होती है। इसलिए व्यक्ति अपने बारे में ही सोचता है और अपने व्यक्ति का अधिकतम विकास करना चाहता है।

पहले व्यक्ति नैतिक मान्यताओं का पालन करना अनिवार्य मानते थे परन्तु आज व्यक्तिगत स्वार्थ या विकास के लोभ में व्यक्ति सामूहिक हानि करने से नहीं चूकता जैसे दवा विक्रेता असली दवा के दामों में नकली दवा बेचकर दूसरों के जीवन से खिलवाड़ करता है। नैतिकता के पतन के कारण ही समाज में अपराध, भ्रष्टाचार, झूठ, चोरी, डकैती, हत्या, बलात्कार, रिश्वत जैसे अनेक गलत कार्य किये जा रहे है।

भारत परम्पराओं का देश रहा है पहले लोग भोजन जमीन पर; फर्श पर, बैठकर करते थे जिससे भर पेट भोजन शांति से स्थिर होकर खाते थे लेकिन आजकल पश्चिमी सभ्यता की ऐसी चलन हो गई है कि अब भोजन भी खड़ा होकर और जाकर मांग कर खाना पड़ रहा है खड़ा होकर खाना खाने से आदमी भर पेट खाना भी नहीं खा पाता है और न शांति मिलती है न तृप्ति होती है।

हमारी भारतीय संस्कृति में तांबा के लोटा से हम लोग पानी पीते थे। पीतल के बर्तन में खाना खाते थे जिससे पेट में गैस नहीं होता था लेकिन पश्चिम सभ्यता के कारण आजकल हम स्टील के बर्तन से खाते और पानी पी रहे है। लोग कहते है कि महँगाई के चलते तो जब फैंशन की दुनिया में आइएगा तो मंहगाई का मार तो झेलना ही होगा।

पश्चिमीकरण ने भारत में सांस्कृतिकरण के क्षेत्रों को इतना अधिक प्रभावित किया कि भारत में पश्चिमी ढंग की शिक्षा देने में पब्लिक स्कूलों और कॉलेजों में प्रतियोगिता की होड़ लगी है। धर्म जो संस्कृति का सबसे प्रमुख अंग होता है, उसके प्रति आस्था होते हुए भी धर्म की जटिलता में कमी पायी जा रही है।

भाषा और बोली पर भी इसका काफी प्रभाव पड़ा है। हमारे भारतीय सभ्यता की प्राचीन भाषा संस्कृत है जो सभी भाषाओं की जननी है। सबका उद्भव संस्कृत से हुआ। संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसमें मिठास, गुणो की खान, संस्कृति, शिष्टाचार, आचार–विचार, वेश–भूषा, उच्च–नीच, आहार–विहार, उत्तम–निम्न, रहन–सहन सभी का ज्ञान मिलता है जो कि आज हमारे भारत से लुप्त होता जा रहा है।

आज यदि कोई अंग्रेजी में बोलते है तो उन्हे ही स्मार्ट समझा जाता है। पाश्चात्य आदर्श और शिक्षा संयुक्त परिवार के अनुकूल नहीं है। इसके अनुसार तो पति–पत्नी और बच्चे का एक छोटा ही आदर्श परिवार है। आज के नव–युवक पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त कर व्यक्तिगत अधिकार और स्वतंत्रता पर अधिक बल देते है जबकि इनके माता–पिता उन्हे परिवार के प्रति उत्तरदायी तथा माता–पिता के प्रति अपने कर्त्तव्यों के विषय में जागरूक देखना चाहते है। ऐसी स्थिति में नयी और पुरानी पीढ़ी में संघर्ष उत्पन्न होता है। यह स्थिति संयुक्त परिवार को विघटित करने में सहायक है।

अंग्रेजों के भारत आगमन से पूर्व नृत्य और संगीत का क्षेत्र सीमित होकर कुछ राजघरानों तक ही सिमट गया था किन्तु पश्चिम के प्रभाव से नृत्य और संगीत में जागृति आयी है जिसके प्रभाव से शादी–विवाह के अवसरों पर डी0 जे0 आर्केस्टा में पश्चिमी नृत्य कैबरे स्वीस्ट, शेक, बैक्री आदि का प्रचलन आज चरम पर है। अन्त में पश्चिमीकरण का प्रभाव रहन–सहन पर भी पड़ा है। आज की स्त्रियां परम्परागत रहन–सहन को छोड़कर पश्चिमी रंग में रंगने लगी है जैसे– साड़ी को नये ढ़ग से पहनना, आंचल का प्रयोग न करना, पैंट, जींस, टीशर्ट टॉपलैस वस्त्रों का प्रयोग करना, स्त्रियों को बाल कटवाना, घर के कार्यो में रूचि न लेना, सौन्दर्य प्रसाधनों का अधिकाधिक प्रयोग करना, बच्चों को पब्लिक स्कूल में पढ़ाना, माँ को मम्मी या मॉम कहना, पापा को डैडी या डैड कहना अदि।

आज हमारे देश में इतने चरम पर यौन शोषण बढ़ने में भी पश्चिमी सभ्यता का ही देन है। जिसमें दुष्प्रचारित चलचित्र, फैशन, नशा, गलत प्रवृति अपने आप को ज्यादा स्मार्टनेस दिखाना।

इस प्रकार भारतीय समाज में होने वाले सामाजिक परिवर्तनों पर औद्योगीकरण, नगरीकरण, पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति शिक्षा, राजनीतिक संगठन बढ़ती हुई जनसंख्या, नियोजन, सामुदायिक जीवन, पूँजीवाद का विकास, मँहगाई, फैशन, चलचित्र, रहन–सहन, नृत्य एवं संगीत कला आदि का प्रभाव है जिससे भारतीय

समाज सभी तरफ से प्रभावित हुआ है। इससे जहां एक ओर अच्छे परिणाम देखने को मिलते है वहां दूसरी ओर कुछ कमियां भी दृष्टिगोचर हुई है। यह देश ऋषि–मुनियों, देवी–देवताओं, राम–सीता, कृष्ण–अर्जुन, गौतम बुद्ध, महाबीर, बीर सपूतो का देश रहा है।

अब आज के कर्णधारों पर निर्भर करता है कि वे इस परिवर्तन को देश की आवश्यकता और हित में परिवर्तन करे जिससे देश सही दिशा में प्रगति कर सके।

संदर्भ सूची

1 श्री निवास एम0 एन0– सोशल चेंन्ज इन मॉर्डन इंण्डिया– बाम्बें वोरीयेन्ट लॉगमैन–1972.
2 सिंहल डॉ0 एस0 –पोलीटिकल सोसलॉजी– लक्ष्मी नारायण अग्रवाल– आगरा–2005
3 केन्ट्रील हैडली– द साइकोलोजी ऑपफ सोशल मोभमेन्ट– न्यूॉर्क– जॉन वैली–1963
4 डेविड आई– सोशल मोबिलिटी एण्ड पोलीटिकल चेंन्ज– लंदन–पाल मॉल–1970
5 माईकलवैर आर0 एम0– ऐलीमेन्टस ऑपफ सोशल साईन्स– लंदन–मैथुयेन–1956